# श्रीगोविन्दाष्टकम्

सत्यं ज्ञान मनन्तं नित्य मनाकाशं परमाकाशं
गोष्ठ प्राङ्गण रिङ्खण लोल मनायासं परमायासम् ।
माया कल्पित नानाकार मनाकारं भुवनाकारं
क्ष्मामानाथ मनाथं प्रणमत गोविन्दं परमानन्दम् ॥ १॥

मृत्स्नामत्सी हेति यशोदा ताडन शैशव सन्त्रासं
व्यादित वक्त्रा लोकित लोका लोक चतुर्दश लोकालिम् ।
लोकत्रय पुर मूल स्तम्भं लोकालोक मनालोकं
लोकेशं परमेशं प्रणमत गोविन्दं परमानन्दम् ॥ २॥

त्रैविष्टप रिपु वीरघ्नं क्षिति भारघ्नं भवरोगघ्नं
कैवल्यं नवनीता हार मनाहारं भुवनाहारम् ।
वैमल्य स्फुट चेतोवृत्ति विशेषा भास मनाभासं
शैवं केवल शान्तं प्रणमत गोविन्दं परमानन्दम् ॥ ३॥

गोपालं प्रभु लीला विग्रह गोपालं कुल गोपालं
गोपी खेलन गोवर्धन धृति लीला लालित गोपालम् ।
गोभि र्निगदित गोविन्द स्फुट नामानं बहुनामानं

गोपी गोचर पथिकं प्रणमत गोविन्दं परमानन्दम् ॥ ४॥

गोपी मण्डल गोष्ठी भेदं भेदावस्थ मभेदाभं
शश्व द्गोखुर निर्धूतोद्गत धूली धूसर सौभाग्यम् ।
श्रद्धा भक्ति गृहीता नन्द मचिन्त्यं चिन्तित सद्भावं
चिन्तामणि महिमानं प्रणमत गोविन्दं परमानन्दम् ॥ ५॥

स्नान व्याकुल योशि द्वस्त्र मुपादा याग मुपारूढं
व्यादित्सन्ती रथ दिग्वस्त्रा ह्युपुदातु मुपाकर्षन्तम् ।
निर्धूत द्वय शोक विमोहं बुद्धं बुद्धे रन्तस्थं
सत्तामात्र शरीरं प्रणमत गोविन्दं परमानन्दम् ॥ ६॥

कान्तं कारण कारण मादि मनादिं काल मनाभासं
कालिन्दी गत कालिय शिरसि मुहुर्नृत्यन्तं नृत्यन्तम् ।
कालं काल कलातीतं कलि ताशेषं कलि दोषघ्नं
कालत्रय गति हेतुं प्रणमत गोविन्दं परमानन्दम् ॥ ७॥

वृन्दावन भुवि वृन्दारक गण वृन्दाराध्यं वन्देऽहं
कुन्दाभामल मन्दस्मेर सुधानन्दं सुहृदानन्दम् ।
वन्द्याशेष महामुनि मानस वन्द्यानन्द पद द्वन्द्वं

वन्द्याशेष गुणाब्धिं प्रणमत गोविन्दं परमानन्दम् ॥ ८॥

गोविन्दाष्टक मेत दधीते गोविन्दार्पित चेता यो
गोविन्दाच्युत माधव विष्णो गोकुल नायक कृष्णेति ।
गोविन्दाङ्घ्रि सरोज ध्यान सुधाजल धौत समस्ताघो
गोविन्दं परमानन्दामृत मन्तःस्थं स तमभ्येति ॥

॥ इति श्रीमच्छङ्करचार्य विरचितं श्रीगोविन्दाष्टकं सम्पूर्णम् ॥